संत कवि नितानंद के काव्य में विरह-वेदना

डॉ. अमित कुमार
सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय,महेंद्रगढ़-123031

संत काव्य परम्परा में अनेक संत कवियों का योगदान रहा है।संसार के झमेलों से अपने को बचाते हुए इन संत कवियों ने सांसारिक कर्मों को मनुष्य को उसकी मूल राह से भटकाने वाले कारक माना है, इसलिए उन्होंने समाज में भक्ति के भाव की स्थापना की कामना के साथ मनुष्य को नेक राह पर चलने की सीख दी है। अनेक संत कवियों को उनके जीवन-काल में वह प्रसिद्धि प्राप्त हुई, जिसके वे हकदार थे। आलोचकों की पसंद-नापसंद ने भी उनके मूल्यांकन में महत्ती भूमिका निभाई है। आज भी अनेक ऐसे कवि हमारे यहाँ हैं, जिनके काव्य पर चर्चा करना प्रासंगिक जान पड़ता है। नितानंद ऐसे ही कवि हैं, जिन पर अपेक्षाकृत कम बातचीत हुई है।इसके अनेक कारण हो सकते हैं। बहरहाल,वे संत काव्य परंपरा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनका जन्म 1710 ई. के आस-पास हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के नारनौल नगरमें हुआ था। नितानंद जी का मूल नाम नंदलाल था। उनके गुरु गुमानी दास थे। नितानंद की रचनाओं का एकमात्र संकलन 'सत्य सिद्धांत प्रकाश' है जिसके संचयन का श्रेय भोलादासप्रज्ञाचक्षुको जाता है। यहभोलादास जी की वजह से ही संभव हो पाया कि संत नितानंद की वाणी का लिखित रूप आज हमें देखने को मिल सका है।

नितानंदको जीवन से वैराग्य हुआ था।वे सांसारिक सुख-दुख सेविरक्त हो भक्ति की राह पर चले।जीवात्माऔर परमात्मामेंवेकोई भेद नहीं समझते थे, इसलिएउनके जीवन का उद्देश्य जीवात्मा को परमात्मा से मिलाने का ही रहा। उनके काव्य में हमें आत्मा की परमात्मा से मिलने की तड़प बहुत दिखाई देती है। विरह में नितानंद परमात्मा के सामने जीवात्माऔर स्वयं को सखी मानते हैं। वेजीव को परमात्मा के घर से आया हुआ बताते हैं।इसीलिये विरह का एकमात्र कारण जीव का परमात्मा से अलग होना ही है। जीवात्मा अपने ब्रह्म का एक अंश है और वह उसमें ही जाकर मिलना चाहती है। इसलिए वह बावली सखी की तरह यहाँ-वहां घूमती हुई एक स्थायी ठौर की तलाश करती है।नितानंद जीवात्मा के रूप में स्वयं परमात्मा से मिलने के लिए बेचैन हैं और कहते हैं :

"हर प्रीतम के नगर से, आया विरह नरेश ।
नितानंद बौरी सखी, चलो पिया के देस।।"1

पिया का देश से यहां अभिप्राय परमात्मा के उस स्थान से है जहां जाने के लिए आत्मा निरन्तर जन्म लेती है और कभी उससे मिल नहीं पाती। यह न मिलना एक तरह से मिलना ही है। मिलन के बाद तो जीवन का लक्ष्य जैसे खत्म ही हो जाता है। अतः यह न मिलना और मिलने की हसरत लिए जीव की बेचैनी उसे हरदम अपने प्रिय से जोड़े रखती है। इसलिए आत्मा बार-बार जन्म नहीं लेना चाहती, क्योंकि जन्म लेने से उसे अपने प्रिय से दूर रहनापड़ता है, जो वह कभी नहीं चाहती।यही कारण है कि वह जन्म-मरण के चक्र से हमेशा के लिए मुक्ति चाहती है,ताकि अपनेप्रिय परमात्मा का संग उसे हमेशा मिलता रहेऔर कभी बिछुड़ना न पड़े। जीवात्माको नितानंद एक विरहिणी की तरह देखते हैं। गृहस्थी से सदैव दूर भागने वाले इस संत कवि ने परमात्मा और जीवात्मा को पति-पत्नी के रूपक में देखा है। वे कहते हैं :

"जिस नगरी बालम बसें, हम उस नगर चलां।
अखियां पंख लगाय कर, सन्मुख जाय मिलां।।"2

बालम की वह कौनसी नगरी है जहाँ नितानंद प्यारी बनकर पहुंचना चाहते हैं।अपनी रचनाओं में उन्होंनेइस नगरी को अनेक नामों से पुकारा है। अन्य संत कवियों ने भी उस नगरी का अपने-अपने अनुसार सृजन किया है। यह नगरी हमें केवल कवि की कविताओं में ही दिखती है, असल में होती नहीं.किसीभी रचनाकार का यह एक यूटोपिया है।जैसे रैदास के यहाँ 'बेगमपुरा' नाम का शहर आया

जो हर प्रकार के दुखों और सीमाओं से परे है। यह उसअदृश्य नगरी के नाम हैं जहां आत्मा के बालम बसते हैं।

आत्मा रूपी यहविरहिणी परमात्मा रूपी पिया से रू-ब-रू होना चाहती है। बिना मिले उसे कुछ भी नहीं सुहाता, न चैन पड़ता। रात-दिन वह इसलिए सिसकती है क्योंकि पिया उसकी सुध लेना भूल गए हैं। अब वह बीच में झूल रही है। एक तरफ संसार है जो अपने स्वभाव में ही निष्ठुर है। जहां प्रेम के लिए कोई जगह नहीं है, दूसरी तरफ पिया का 'घर' है जहाँ प्रेम ही प्रेम है, यहां लेकिन पिया अपनी प्यारी को भूल गए हैं और प्यारी जिनके बिन रोती है, सुबकती है, अधमरी हुई जाती है। वह दिन-रात जागती रहती है और पिया अर्थात अपने स्वामी की ओर टकटकी लगाए रहती है। नितानंद ऐसे ही जीव के बारे में कहते हैं कि वह परमात्मा से मिलन के लिए व्याकुल है। उसकी व्याकुलता बिना हरि के दर्शनों के कम नहीं हो सकती। हरि उसके चेतन-अचेतन मन में भीतर तक समाया हुआ है। जीव भी हरि को न सोते हुए बिसराता है, न जागते हुए। बिन दर्शनों के जीव की व्याकुलता जैसे मिटती ही नहीं :

"सोवत सजन न बीसरूं, जागत टेरूं पीव।
नितानंद दर्शन बिना, बिकल हमारा जीव।।"3

नितानंद जीव और ब्रह्म के बीच विरह को एक पर्दा मानते हैं। विरह और संसारिकता का पर्दा ही जीव को ब्रह्म से मिलने नहीं देता। यह पर्दा महीन तोहै किंतु निरंतर अपने होने का आभास कराता है. इस पर्दे का हटना जीव के लिए एक आस और उपलब्धि की तरह है। विरह जीव के लिए हिमालय-साहै जो उसे उसके प्रिय तक पहुँचने में बाधापहुंचाता है. यह विरह ही है जोजीव के मन को भी गला देता है तो कभी यह समुद्र की तरह अपनेअथाह होने का अहसास भी कराता है। विरहमानोजीव के लिए जंजाल है और जीवइस जाल से मुक्ति चाहता है। इसी मुक्ति की उम्मीद में ही नितानंद कहते हैं :

"नितानंद वह कद मिलै, मिला मिलाया लाल।
जब लग परदा बीच में, लगा बिरह जंजाल।।"4

विरह का एकमात्र कारण आत्मा का परमात्मा के प्रति खिंचाव है। अन्य भक्त कवियों की तरह नितानंद को भी आत्मा और परमात्मा स्त्री-पुरुष की तरह दिखाई देते हैं. आत्मा और परमात्मा दोनों के बीच गहरा प्रेम है। यह प्रेम ही है जो दोनों को जोड़े रखता है और अलग नहीं होने देता। और यह प्रेम ही है जो इहलोक से जीव को आज़ादी दिला सकता है। प्रेम संत कवियों के यहां अलग-अलग रूपों में आया है। नितानंद ने भी प्रेम को जीव की मुक्ति के लिए आवश्यक माना है। अपनी बात को वे इस तरह से कहते हैं :

"इश्क़ रब्ब की मेहर है, इश्क रब्ब की याद।
इस दुनिया की क़ैद से, करे इश्क आज़ाद।।"5

नितानंदहर बार जीव और ब्रह्म को भिन्न रूप में देखते हैं।जीव और ब्रह्म यहाँस्त्री-पुरुष के रूप में हैं तो लेकिन वे एक-दूसरे में बदलते रहते हैं। स्त्री कभी पुरुष बन जाती है तो पुरुष कभी स्त्री।इसीलिये जीव को कभी स्त्री के रूप में देखते हैं तो कभीपुरुष के रूप में भी।जग में आशिक यहाँ जीव है और उसकी माशूक ब्रह्म।आशिक को माशूक बिन यह सारा संसार सूना लगता है, तो कहीं ब्रह्म 'महबूब' के रूप में है और यह इश्क का ही प्रभाव है कि आशिक माशूक हो जाता है। नितानंद कहते हैं कि ऐसा लगता है जैसे इस रूपांतरण के कारण ही इश्क में यह खेल तमाशे की तरह नजर आता है। स्वयं ही देखिये :

"आशिक को माशूक बिन, सब जग लगे उदास।
रहे इश्क की क़ैद में, कै हर चरण निवास।।"6

--- --- ---

"इश्क आय कर ले गया, जहां आप महबूब।
आशिक मासुक हो गया, हुआ तमासा खूब।।"7

इश्क और विरह के इस धूप-छाँव को कवि नितानंद ने अपनी कई रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। जीवात्मा में ब्रह्म से मिलने का एक उत्साह है। उसके मन में एक कसक है।वह आध्यात्मिक और भौतिक दोनों रूपों से ईश्वर से मिलन चाहती है।आत्मा जब पिया के घर जाने में अपने को असमर्थ मानती है तो उसे यह उम्मीद होती है कि पिया ही अपना घर छोड़कर उसके इस लोक में आयेंगे, तब वह उनके दर्शन से अपने को तृप्त करेगी। इस संसार में वह बहुत दुखी है। संसार के झंझावात उसे अपने में उलझाये ही रखते हैं। वह दुखों के भवसागर से पार उतरना चाहती है। इसके लिए उसे अपने उसी महबूब का इंतज़ार है जिसे वह कभी भक्तिभाव से तो कभी दास्य भाव से अपने पास बुलाना चाहती है:

"मेरा साहेब कब घर आवे।
दर्शन देख सभी दुख भाजैं, सुख की लहर दिखावे।।
काया नगर में करे रोशनी, दिल दा देस बसावे।।
भर-भर नैन चैन से निरखूँ, अंग में अंग मिलावे।"8

--- --- ---

"मेरे हिबरे में बस गयो रामां।
हर दर्शन की प्यास हमारे, कद पहुंचे उस गामां।।"9

--- --- ---

"नितानंद वह कद मिलै, जिसकी मेरे प्यास।
बिन देखे महबूब के, आठों पहर उदास।।"10

--- --- ---

"नितानंद कासे कहूं, अपने दुःख की बात।
पीव मिले तो जीव जीए, बिना मिले मर जात।।"11

विरह प्रेम की कसौटी है। यह कसौटी ही बताती है कि आप किसी से कितना प्रेम करते हैं। संसार में आज भी उसी प्रेम को याद रखा गया है जिसने विरह की कठिन घड़ी में भी अपने को जिंदा रखा है। विरह की यह बेचैनी, तड़प, पीड़ा दोनों को एक-दूसरे से जोड़े रखती है। विरह में जीवात्मा अपने को इतना भूल जाती है कि उसे अपने शरीर तक का ध्यान नहीं रहता। उसकी स्थिति उस सूखी लकड़ी और सूखी लता की तरह हो जाती है जिससेअब किसी भी अंकुर के फूटने की आस बाकी नहीं रहती।उसे अपने जीवन में कोई आधार नहीं

दिखाई देता। उसकी सब उम्मीदें ख़त्म हो जाती हैं। ब्रह्म का आसरा उसे इसीलिये चाहिए कि उसके जीवन में भी उम्मीद का बल्ब जल जाए और उसका प्रकाश उसके बाहर-भीतर को आलोकित करे :

"सूक सूक लकड़ी भई, मिले न सींचनहार।
नितानंद कब पाइए, जीवन प्रान अधार।।"12
--- --- ---
"तन पीरा सीरा बचन, और उनमने नैन।
जिव को जब तक लग रही, नितानंद दिन-रैन।।"13
--- --- ---
"विरहिन डोले ढूंढती, कहाँ पीव का बास।
नितानंद को दरश दो, जन्म-जन्म का दास।।"14

नायिका की नितानंद के यहाँ कोई स्पष्ट पहचान नहीं है।वह एक आत्मा है जिसे किसी एक नाम से हम जान नहीं सकते। आत्मा एक प्रवाह है। एक संसार। एक चेतना। इस आत्मा के विरह को देखते हुए हमउन नायिकाओंको याद कर सकते हैं,जो खून के आंसू रोतीहैं।नितानंद के यहाँ न ब्रह्म का कोई घोषित नाम है, न जीवात्मा का। यह अलग बात है कि नितानंद ने उसी ब्रह्म को 'पिया', 'महबूब', 'सजन', 'साहेब', 'बालम', 'राम', 'हरि' आदि नामों से संबोधित किया है। उसका कोई एक नाम नहीं है, न कोई एक रूप। उसी अनेक नामों वाले प्रिय से जीवात्मा का न मिलने के कारण उसमें बेचैनी इतनी है कि विरह में उसकी देह पीलीपड़ जाती है और वह ठंडी आहें भरती है। उसे अपने प्रिय की गंध चाहिए, जिसके बिना वह एक क्षण भी जी नहीं सकती। वहअपना सबकुछ अर्पित कर केवल उस ब्रह्म को पाना चाहती है जो अथाह है। रात-दिन वह एक ही धुन में रमी हुई दिखती है तो इसलिए कि हरि बिन उसे और कोई अपना नज़र नहीं आता।

संदर्भ

1. नितानंद; सत्य सिद्धांत प्रकाश; ग्रंथ संग्रहकर्ता: भोलादास प्रज्ञाचक्षु; जटेला धाम, ग्राम व डाक : माजरा, जिला-झज्जर(हरि.); संस्करण: 2015; पृ. 34 / 1
2. वही;पृ. 36 / 29
3. वही;पृ. 45 / 94
4. वही;पृ. 47 / 113
5. वही;पृ. 52 / 164
6. वही;पृ. 54 / 180
7. वही;पृ. 54 / 187
8. वही;पृ. 553 / 173
9. वही;पृ. 508 / 104
10. वही;पृ. 46 / 109
11. वही;पृ. 35 / 16
12. वही;पृ. 44 / 87
13. वही;पृ. 41 / 52
14. वही;पृ. 50 / 145

हिन्दी और उर्दू दोनों को मिलाकर हिन्दुस्तानी भाषा कहा जाता है। हिन्दुस्तानी मानकीकृत हिन्दी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है। इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी-अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक। उच्च हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा है (अनुच्छेद ३४३, भारतीय संविधान)। यह इन भारतीय राज्यों की भी राजभाषा है : उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली। इन राज्यों के अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, पंजाब और हिन्दी भाषी राज्यों से लगते अन्य राज्यों में भी हिन्दी बोलने वालों की अच्छी संख्या है। उर्दू पाकिस्तान की और भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर की राजभाषा है, इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, बिहार, तेलंगाना और दिल्ली में द्वितीय राजभाषा है। यह लगभग सभी ऐसे राज्यों की सह-राजभाषा है; जिनकी मुख्य राजभाषा हिन्दी है।